इस ब्रह्माण्ड के संचालन में नियुक्त नाना देवताओं में ब्रह्मा, शिव, चारों कुमार और अन्य प्रजापति प्रधान हैं। इस प्रकार ब्रह्माण्ड की प्रजा के बहुत से पितामह हैं; वे सभी परमेश्वर श्रीकृष्ण से उत्पन्न हुए हैं। इस न्याय से भगवान् श्रीकृष्ण सब पितामहों के भी आदि पितामह हैं।

श्रीभगवान् के ये कतिपय ऐश्वर्य हैं। इनमें अटूट विश्वास हो जाने पर मनुष्य श्रीकृष्ण को अतिशय श्रद्धारहित स्वीकार करके निःसन्देह उनकी भक्ति करता है। प्रेममयी भगवद्भक्ति में अनुरक्ति और अभिरुचि को बढ़ाने के लिए यह विशिष्ट ज्ञान आवश्यक है। श्रीकृष्ण की महिमा को पूर्णरूप से हृदयंगम करने में प्रमाद न करे, क्योंकि श्रीकृष्ण की महिमा के ज्ञान से निष्किंचन भक्तियोग में अचल निष्ठा हो जाती है।

अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते।
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः।।८।।

अहम् =मैं; **सर्वस्य** =सबकी; **प्रभवः** =उत्पत्ति का कारण हूँ; **मत्तः** =मुझ से ही; **सर्वम्** =सब कुछ; **प्रवर्तते** =चेष्टा करता है; **इति** =इस प्रकार; **मत्वा** =तत्त्व से जान कर; **भजन्ते** =भक्ति करते हैं; **माम्** =मेरी; **बुधाः** =बुद्धिमान्; **भावसमन्विताः** =अतिशय श्रद्धा और भक्ति के साथ।

अनुवाद

मैं प्राकृत-जगत् और वैकुण्ठ, दोनों का कारण हूँ; मुझ से ही सब कुछ उत्पन्न होता है और चेष्टा करता है, इस प्रकार तत्त्व से समझ कर बुद्धिमान् भक्तजन श्रद्धा और भक्ति के साथ प्रेमपूरित हृदय से निरन्तर मेरा भजन करते हैं।।८।।

तात्पर्य

जो वेदाध्ययन में निष्णात् विद्वान् है, श्रीचैतन्य महाप्रभु की कोटि के आचार्य से ज्ञान प्राप्त कर चुका है और इस ज्ञान का प्रयोग करना जानता है, वह यह जान जाता है कि श्रीकृष्ण सम्पूर्ण प्राकृत-जगत् और वैकुण्ठ-जगत् के मूल हैं। इसी पूर्ण ज्ञान के प्रताप से वह भगवद्भक्ति में निष्ठ हो जाता है। बड़ी से बड़ी अनर्थमयी व्याख्या अथवा मूर्खों में सामर्थ्य नहीं कि उसे कभी भटका सके। सम्पूर्ण वैदिक शास्त्र इस सम्बन्ध में एकमत हैं कि श्रीकृष्ण ब्रह्मा, शिव आदि सब देवताओं के आदिकारण हैं। अथर्ववेद में उल्लेख है: **यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च गापयति स्म कृष्णः**, "कल्प के आदि में श्रीकृष्ण ने ब्रह्मा के हृदय में ज्ञान का संचार किया और उन्होंने ही पूर्व में वैदिक ज्ञान को प्रचारित किया।" पुनः कथन है, **अथ पुरुषो ह वै नारायणोऽकामयत प्रजाः सृजेय इत्युपक्रम्य**, "फिर भगवान् नारायण ने प्रजा-सृजन की इच्छा की।" वैदिक मन्त्रों में आगे उल्लेख है: **नारायणाद् ब्रह्मा जायते नारायणाद् प्रजापतिः प्रजायते नारायणाद् इन्द्रो जायते नारायणादष्टौ वसवो जायन्ते नारायणादेकादश रुद्रा जायन्ते नारायणाद्द्वादशादित्याः।**